

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में स्त्री चेतना: एक सन्दर्भ

रूबी शर्मा, अनुसंधान छात्र, हिंदी विभाग, सनराइज विश्विधालय, अलवर (राजस्थान)

सारांश

हिंदी साहित्य में उषा प्रियंवदा का कथा-साहित्य स्त्री जीवन की जटिलताओं, संवेदनाओं, आकांक्षाओं और सामाजिक परिस्थितियों को सूक्ष्मता से अभिव्यक्त करता है। उनके उपन्यासों में स्त्री पात्र केवल पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे अपने अस्तित्व, स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और जीवन के निर्णयों को लेकर निरंतर संघर्ष करती दिखाई देती हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में अभिव्यक्त स्त्री चेतना का संदर्भगत एवं वैचारिक अध्ययन करना है। उनके प्रमुख उपन्यासों में मध्यवर्गीय स्त्री के पारिवारिक दायित्व, भावनात्मक संघर्ष, अकेलापन, प्रेम, विवाह, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक अपेक्षाओं के बीच उत्पन्न द्वंद्व को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उनकी स्त्री पात्र परंपरागत सामाजिक मान्यताओं को स्वीकार करने के साथ-साथ कई स्थितियों में उनका प्रश्नांकन भी करती हैं। लेखिका ने स्त्री की आंतरिक दुनिया और उसके मनोवैज्ञानिक अनुभवों को विशेष महत्व दिया है, जिससे उनकी रचनाओं में स्त्री चेतना केवल अधिकारों की मांग तक सीमित न रहकर आत्मपहचान और आत्मनिर्णय के प्रश्न से जुड़ जाती है। उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में स्त्री-जीवन की समस्याओं का चित्रण सामाजिक, पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक संदर्भों के समन्वय से हुआ है। यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि उनकी रचनात्मक दृष्टि स्त्री के व्यक्तित्व, गरिमा और स्वतंत्र अस्तित्व को समझने के लिए महत्वपूर्ण साहित्यिक आधार प्रस्तुत करती है।

मुख्य शब्द: उषा प्रियंवदा, स्त्री चेतना, हिंदी उपन्यास, नारी विमर्श, स्त्री अस्तित्व, आत्मनिर्णय, मध्यवर्गीय स्त्री, नारी स्वतंत्रता, सामाजिक चेतना, मनोवैज्ञानिक दृष्टि।

